धूल उड़ती रही

बलवीर सिंह के 'धूल उड़ती रही' नामक उपन्यास पर आधारित

(जिंदा अखबार पढ़ रहा है। उसका पिता कुंदन सिंह बाहर से आता है, आकर जूते झाड़ता है। जिंदा का ध्यान उस तरफ जाता है।)

कुंदन : ये फिर अखबारों, इश्तिहारों का चक्कर *(नाराजगी भरे स्वर में)* पुत्तर, मुझे तेरे ये नेतागिरी के चक्कर अच्छे नहीं लगते।

जिंदा : नेतागिरी कैसी बापू, यह तो सभा द्वारा जो कॉन्फ्रेंस रखी गई है, उसी की तैयारी हो रही है।

कुंदन : ये तेरे सभा वाले काम ही कभी तुझे ले डूबेंगे। पहले वो ठेकेदार बचन सिंह उलाहना दे रहा था।

जिंदा : उसने तो उलाहना देना ही हुआ, उसकी मनमर्जी जो नहीं चल रही।

कुंदन : पर उससे टक्कर लेकर भी तो गांव में चैन से नहीं रहा जा सकता।

जिंदा : क्यों वो यहां का खुदा है जो उसके बिना गांव का काम नहीं चल सकता?

कुंदन : अरे सरकारे-दरबारे तक उसकी पहुंच है। थाने वाले उसका कहना मानते हैं। कोई संकट खड़ा कर देगा।

जिंदा : बापू, आपकी इस तरह की बातों ने ही उसे सिर चढ़ा रखा है, गांव में जो मर्जी करता फिरे, उसे कोई पूछता नहीं- पंचायत का पैसा खुर्द-बुर्द कर दे, कोई उसके खिलाफ आवाज़ नहीं उठाता।

कुंदन : आवाज़ उठाने से क्या होता है। हर तरफ आवा ही ऊत गया है।

जिंदा : इस आवे को दुरुस्त करने के लिए ही तो बापू कॉन्फ्रेंस रखी है।

कुंदन : हुंह, कॉन्फ्रेंस रखी है- जैसे तुम्हारी कॉन्फ्रेंस से ही दुनिया चल रही है- यह कहना आसान है कि ये नहीं होना चाहिए, वो नहीं होना चाहिए - पर होना क्या चाहिए यह कोई नहीं बता सकता- दिल्ली

में ऐसे-ऐसे दिमाग बैठे हैं, उन्हें तुम्हारे से ज़्यादा फिक्र है।

जिंदा : हां बापू, उनके दिमागों ने 64 सालों में जो तीर मारे हैं, वो सबके सामने है।

कुंदन : यही तो मैं कह रहा हूं कि अगर वे कुछ नहीं कर सके तो तुम इन कॉन्फ्रेंसों से क्या कर लोगे?

(बाबा आता है- बाहर से ही बड़बड़ाता आ रहा है।)

बाबा : कोई आदमी भला काम नहीं कर रहा, हर कोई उल्टी गंगा बहाने पर उतारू है।

कुंदन : क्या हुआ ताया... किसकी बात कर रहा है-

बाबा : अपने मास्टर राजू की। लड़का तो कुंदन सिंह वो मेरा ही है पर है निरा मूर्ख-औरत का गुलाम।

कुंदन : पर हुआ क्या, ताया?

बाबा : यह पूछ कि क्या नहीं हुआ? इस मास्टर की जो मास्टरनी है, जब से इस घर में आई है, कलेश खड़ा कर रखा है। ये चमड़े का संदूक-सा क्या ले आई, कभी उसे किसी अलमारी में रखती है तो कभी किसी अलमारी में। सब अमन चैन की नींद सो रहे हैं, गुंडे-बदमाश जो चाहे करें, कोई आवाज़ उठाने वाला नहीं, मेरे मास्टर राजू की तरह सब अपनी औरतों की गोद में जा बैठे हैं- शाबाश, इन लड़कों के, जिन्होंने एक बार फिर अच्छे काम करने का बीड़ा उठाया है- रही बात ठेकेदार बचन सिंह की-यह कोई भला आदमी है? इसका बाप भला आदमी नहीं था, ये कैसे होगा? वो अंग्रेजों का पिछलग्गू था यह सरकार का है- इनका तो खानदान ही ऐसा चला आ रहा है- पुत्तर, मेरे से भी कॉन्फ्रेंस के लिए चंदा ले लेना और मेरे मास्टर को भी कुछ समझाना- सिर्फ औरत के पीछे चलकर सब कुछ नहीं मिलता।

जिंदा : अच्छा ताया जी, और हां बापू, मुझे रात को देर हो जाएगी- मेरा इंतज़ार न करना।

कुंदन : अब जा कहां रहा है?

जिंदा : कहीं नहीं बापू, नौजवानों की एक मीटिंग होनी है।

कुंदन : तुम्हारी ये मीटिंगें मार डालेंगी।

(जिंदा चला जाता है।)

बाबा : कहां तो यह जिंदा है और एक मेरा मास्टर राजू- कुंदन सिंह, अपना

जिंदा किस क्लास में पढ़ रहा है ?

कुंदन : ताया, हो तो अब चौदहवीं जमात में गया है, पर अब इसे हटाना पड़ेगा, खर्चा ही नहीं झेला जाता- तुम्हें तो सब पता ही है, खरीफ की फसल को बाढ़ ले डूबी और रबी की बिजाई ही नहीं हुई, फीस और किताबों का संकट सिर चढ़कर बोलता है।

बाबा : नहीं कुंदन सिंह, नहीं, यह जुल्म मत करना उस पर, लोग क्या कहेंगे, एक ही था, उसे भी कुछ नहीं बनाया। मुसीबतें तो आदमी पर आती रहती हैं। मेरी बेटी, तेरी बहन ने कितने कष्ट झेले, पर शेर की बच्ची ने एक को भी दिल पर नहीं लगाया। शादी हुए बमुश्किल दो बरस बीते थे कि छोटी को गोद में छोड़कर सिर का साईं उठ गया, पर बाप की असली बेटी थी, किसी के आगे झुकी नहीं, अपने पैरों पर खड़ी हुई, अब तो उसकी बेटी छिंदो भी हाई स्कूल में पढ़ने लायक हो गई है।

कुंदन : हां ताया, कल मिली थी, 'मरजाणी' कितनी बड़ी हो गई है, जिंदे से तो बचपन में उसका बहुत प्यार है। बसंती की बात कर रही थी कि भाभी जी के जाने का बहुत अफसोस हुआ है।

बाबा : अच्छा! यह कहती थी, उम्र की छोटी है, पर समझदार बहुत है, तू जिंदे को कॉलेज से मत हटाना, कल चौपाल में लोग बातें कर रहे थे कि जिंदा तो गांव की शान है, ज़िला भर में अव्वल आया है।

कुंदन : पर ताया, तू किधर से आया है ?

बाबा : चौधरियों के गया था, दरवाज़ा खुला देखकर आ गया, मेरी बहू बसंती क्या चली गई, घर का दरवाज़ा भी बंद हो गया, निकलता हूं तो बंद ही पड़ा होता है।

कुंदन : ताया, दरवाजा खुला कैसे रखें, तुझे तो पता है मैं खेत में रहता हूं और जिंदे को पढ़ाई और दूसरे कामों से ही फुर्सत नहीं है। अच्छा तो... बड़े चौधरियों के गया था, क्या हाल है बड़े चौधरी का ?

बाबा : बस अब तो चंद दिनों का मेहमान है, बुरी हालत है, बेटी-बेटा कोई पास नहीं जो उसकी सेवा करे- कुंदन सिंह, बुजुर्गों का बहुत बुरा हाल है।

कुंदन : ताया ये तो निकम्मे मुल्कों के रिवाज़ हैं कि यहां बुजुर्गों को बेटा-बेटी का मोहताज होना पड़ता है। जिंदा बता रहा था कि जिन मुल्कों में इंकलाब आ गया है, वहां बुजुर्गों की सेवा की जिम्मेदारी सरकार

अपने पर ले लेती है। हमारी सरकार को भी चाहिए कि कुछ ऐसा इंतज़ाम करे।

बाबा : कुंदन सिंह, यहां सरकार से नौजवानों की ही संभाल नहीं होती, बूढ़े-बुजुर्गों का कोई क्या करे- अच्छा पुत्तर, जिंदे को पढ़ने से मत रोकना। आदमी के दिन सदा एक से नहीं रहते।

कुंदन : वो तो मैं भी जानता हूं ताया जी, अगर सदा एक से दिन रहते तो ये दिन किसने देखने थे, रूखी-सूखी खाकर ये भी बीत जाएंगे।

(भगत जी का प्रवेश, जो पागल-सा पात्र है)

भगत जी : अगर रूखी-सूखी न मिले, तो फिर?

बाबा : ले सुन ले इसकी बात, अरे भगत जी, तू फिक्र न कर, तुम्हें तो चुपड़ी भी मिलती रहेगी।

भगत जी : क्यों मुझे क्यों मिलती रहेगी? अगर दूसरों को नहीं मिलेगी तो मुझे भी नहीं मिलेगी, अगर मिलेगी भी तो मैं नहीं खाऊंगा, मुझे वो ठेकेदार, बड़ा लाट, कहने लगा, रोटी खा ले- मैंने कहा मैं जूठी क्यों खाऊं, बड़ा सरदार बना फिरता है- मैं नहीं खाऊंगा। भाई जी, तेरे पास लस्सी पड़ी है ना, बस पिला दे, बसंती भाभी हमेशा पिलाया करती थी।

कुंदन : भगत जी, आज ठेकेदार के घर ही पी लेनी थी।

भगत जी : नहीं पीऊंगा, पीऊंगा तो यहां से पीऊंगा, पर मूतूंगा जाकर उसकी दीवार की ओट में, पतंदर क्या याद रखेगा।

बाबा : अरे भगत जी, ठेकेदार ने तुझे क्या कह दिया जो यूं अवा तवा बोल रहा है?

भगत जी : मुझे अवा-तवा बोलने वाला कौन पैदा हुआ है? पर लोगों से क्यों कह रहा है, 'लड़के कहते हैं गुरुद्वारे वाले बरामदे के कमरे में लाइब्रेरी बनानी है।' कहता है, मैं नहीं बनाने दूंगा यहां 'कंजरखाना'।

कुंदन : कंजरखाना?

भगत जी : कह रहा है, लड़के यहां खुराफात करेंगे, खुद जब पीकर गुरुद्वारे में आता है तो क्या 'सुखमणी साहब' का पाठ करने आता है, मैंने उसे कुछ नहीं कहा, फिर भी मेरे पत्थर दे मारा।

बाबा : किसने मारा?

भगत जी : ठेकेदार के लड़के लाल जी ने, पत्थर भी मारा और गालियां भी दी। देखो बाबा जी, खून बह रहा है।

बाबा : उसका सत्यानाश हो, जो इस तरह के भगत आदमी पर हाथ उठाता है- आ लेने दे एक बार, मैं लेता हूं उसकी खबर।

भगत जी : लो आ गया बड़ा लाट, कहता है, हम तो ठेकेदार हैं।

(ठेकेदार का आगमन)

ठेकेदार : क्या बात है जत्थेदार, किस पर गुस्सा निकाल रहा है।

बाबा : बचन सिंह, लाड़-प्यार की भी हद होती है, ये तेरा लाल बिगड़ता जा रहा है। देख, इस बेचारे को किस तरह ज़ख्मी किया है। उसका तो वो हिसाब है- मेरा साईं घर नहीं, मुझे किसी का डर नहीं।

ठेकेदार : तू भी जत्थेदार किस मूर्ख की बात ले बैठा- पहले बात पूछते हैं कि क्या हुआ है? भला लाल जी को क्या ज़रूरत है कि इसे बेकार में मारता फिरे?

भगत जी : मैंने उसे क्या कहा था?

ठेकेदार : तूने उसे गाली नहीं बकी थी?

भगत जी : उसने मेरा कमीज़ खींचकर क्यों फाड़ा था?

ठेकेदार : कमीज़ तो तेरा बहुत नया था?

भगत जी : तो फिर तू मुझे नया सिलवा दे।

ठेकेदार : अच्छा, सिलवा दूंगा।

भगत जी : मैं नहीं लूंगा तेरे से।

ठेकेदार : अच्छा बाबा, जा।

भगत जी : नहीं जाता, मैं किसी के बाप की जमीन पर नहीं खड़ा।

बाबा : अरे भगत जी चल, तेरे हल्दी लगा दूं।

ठेकेदार : हां, ले जा इस नवाब को, ऐरे-गैरे को सिर चढ़ा रखा है।

भगत जी : तू अपने पिल्लों को संभाल, जो लोगों को पत्थर मारते फिर रहे हैं।

बाबा : भगत जी, चुप हो जा।

भगत जी : चुप हो जाता हूं- पहले इसे कहो अपने पिल्लों को संभाले।

(भगत जी बैठ जाता है, जत्थेदार चलने को होता है।)

ठेकेदार : पर जत्थेदार, तू अब कहां चल दिया, बैठ तो सही, तुम सबके साथ सलाह-मशविरा करना है।

बाबा : कैसा मशविरा ठेकेदार?

ठेकेदार : मैं सोच रहा था कि इस बार गुरुपर्व शान से मनाएं, पैसा सारे गांव से इकट्ठा कर लेंगे।

बाबा : यह तो ठीक है, गुरुपर्व हम शान से ही मनाएं- और ऐसा करें कि

बाहर एक बरामदा और बना दें, लड़के कह रहे हैं, लाइब्रेरी बनानी है– गुरुपर्व वाले दिन उसका भी उद्घाटन कर दें।

ठेकेदार : तेरे होश तो ठिकाने हैं कुंदन ?

बाबा : लाइब्रेरी बनाना कोई बुरी बात है ?

ठेकेदार : लड़के तो जत्थेदार, पहले ही काबू से बाहर हैं, कोई बड़ों की इज्ज़त नहीं करता, लाइब्रेरी खोलेंगे। इधर-उधर की किताबें पढ़ेंगे और बिगड़ेंगे।

बाबा : बचन सिंह, कुछ लड़के तो बहुत समझदार हैं, गुस्सा मत करना, सारे तेरे लाल जी जैसे नहीं हैं।

ठेकेदार : मेरी बात सुन जत्थेदार, लड़के तो सिर्फ हुड़दंग करना ही जानते हैं, इन्हें क्या पता सरकारे-दरबारे कैसे काम होते हैं– मैंने तो स्कीम बनाई है कि यहां एक बड़ा जलसा रखें। एम.एल.ए. को अध्यक्ष बना लेंगे, वो आगे किसी मंत्री को बुला लेगा, मंत्री खुद ही गांव के लिए कुछ न कुछ दे जाएगा। *(बाबा उठ जाता है।)* जत्थेदार, तू कहां चल दिया ?

बाबा : बचन सिंह, मैं तो गुरुपर्व की बात सुनकर रुक गया था, तूने बीच में वज़ीर को भी घुसेड़ लिया, मैं रुककर क्या करूंगा ? चल भगत जी, मेरे साथ।

भगत जी : नहीं, मैं तो यहीं रहूंगा, वज़ीर आएगा, जलसा होगा, बाजे बजेंगे– गीत बजेंगे, 'बाबा वे, कला मरोड़'। इस तरह बाबा का गुरुपर्व मनाया जाएगा, बड़ा मजा आएगा।

ठेकेदार : चुप कर ओए।

भगत जी : नहीं करता, फिर।

ठेकेदार : जत्थेदार, एक मिनट तो ठहर, पूरी बात तो सुन, हां तो कुंदन सिंह, क्या राय है तेरी ?

कुंदन : ठेकेदार, तुम जिस तरह मर्जी कर लो, हां, हम इस तरह क्यों न करें कि लाइब्रेरी का उद्घाटन वज़ीर से करवा लें, लड़कों की बात भी रह जाएगी।

ठेकेदार : तू लड़कों की बात मत कर कुंदन सिंह– ये तो बुजुर्गों की पगड़ी उछालने पर उतारू हैं।

भगत जी : बुजुर्गों को चाहिए पहले ही उतार कर कांख में दबा लें, फिर कौन उछालेगा ?

ठेकेदार : अरे, तू चुप हो जा।

भगत जी : नहीं होता, फिर।

कुंदन : ठेकेदार, तू जैसा कहेगा, हम वैसा ही कर लेंगे, हम तेरे से अलग थोड़े ही हैं ?

ठेकेदार : यह काम तो सबका सांझा है जत्थेदार जी, आपने भी साथ देना है। मैं तो गांव के भले की बात करता हूं। *(भगत जी से)* चल रे भगत जी, तुझे लस्सी पिलाऊं।

भगत जी : नहीं पीऊंगा, पहले मारते हैं, फिर लस्सी पिलाते हैं।

(ठेकेदार जाता है)

बाबा : कुंदन सिंह, यह ठेकेदार मुझे अच्छा आदमी नहीं लगता। इसका लड़का इसके काबू में नहीं है। इसने भला गांव का क्या संवारना हुआ, जो अपना घर नहीं संवार सका ? सुना है, अगली बार एम.एल.ए. बनना चाहता है।

कुंदन : ठीक ही सुना है ताया, यूं ही तो नहीं वजीरों की बातें कर रहा है।

भगत जी : हां, हां, पहले गांव का बहुत कुछ संवार दिया, अब इलाके को निहाल कर देगा।

(भगत जी चल पड़ता है)

बाबा : ठीक ही कहता है भगत जी- अब कहां चल दिया ?

भगत जी : वो उधर गया है, मैं इधर से जाकर उसकी दीवार की ओट में मूतूंगा - 'पतंदर' क्या याद करेगा, बड़ा आया है एम.एल.ए.-

बाबा : अरे फिर मेरे पास आ जाना, तेरे पट्टी बांध दूंगा।

(भगत जी चला जाता है)

बाबा : *(जाते हुए मुड़कर)* हां तो कुंदन सिंह, जिंदे को पढ़ने से मत रोकना, मेरी यह बात गांठ बांध ले।

कुंदन : अब ताये को क्या बताऊं कि बसंती की इस निशानी के साथ मेरी क्या-क्या उम्मीदें बंधी हैं।

(धीरे-धीरे फेडआऊट)

दूसरा दृश्य

कुंदन : लो, कॉन्फ्रेंस तो तुम्हारी निपट गई, अब आगे क्या करने का इरादा है ?

जिंदा : हमने तो बापू जी नींव ही रखी है, आगे जो आप कहोगे वही करेंगे, आप ही बताओ क्या करें ?

कुंदन : मैं क्या बताऊं ?

जिंदा : क्यों, आपको सब कुछ ठीक चलता ही दिखाई दे रहा है ? कुछ ऐसा नहीं दीखता, जिसे आप गलत समझें ? कुछ ऐसा नहीं जो बदलना चाहिए ?

कुंदन : ठीक यहां क्या है ? हर बात तो गलत है– हम जो थोड़ी ज़मीनों वाले हैं या हम जैसे जो गरीब किसान हैं, हमारा जीना भी कोई जीना है ?

जिंदा : फिर यह जीना कैसे ठीक होगा, बापू जी ?

कुंदन : मुझे क्या पता ?

जिंदा : बापू जी, आपको पता होना चाहिए कि क्यों आपकी फसल मंडियों में ख़्वार हो रही है ? क्यों तेल के भाव आसमान छू रहे हैं ? मां क्यों उम्र भोगने से पहले ही हमें छोड़ गई ? इसी कारण कि इस निजाम में गरीब आदमी के लिए कोई सहूलियत नहीं है । हर सहूलियत पैसे वालों के लिए महफूज़ है ।

कुंदन : इसमें क्या शक है ? बेटा, तेरी मां ने पहले तो कुछ बताया ही नहीं, जब शहर के अस्पताल में ले जाकर दिखाया तो डॉक्टर कहने लगे, 'पहले आना था । अब बीमारी बढ़ गई है ।'

जिंदा : पहले तो तब जाते जब बीमारी का कुछ पता रहता– मां यहीं नीम–हकीमों के टोटके आजमाती रही– साधुओं से चुटकी भर राख लाती रही, अगर यहां, हमारे गांव में डॉक्टर होता, कोई अस्पताल होता तो पहले पता चल जाता । पर यहां क्या है ? कुछ भी नहीं... कुछ भी तो नहीं ।

कुंदन : तेरी मां के चले जाने से घर ही उलट गया है... अच्छा, छोड़ इन बातों को, मैं दो रोटी सेंक लूं– देर हो रही है ।

जिंदा : रोटी तो बनी पड़ी हैं ।

कुंदन : अरे तुझे कितनी बार कहा है कि तू मत बनाया कर ।

जिंदा : मैंने नहीं बनाई, छिंदो बना गई है ।

कुंदन : वो क्यों बना गई है ?

जिंदा : मुझे क्या पता, ताया जी ने कहा होगा, किताब देने आई थी, तब बना गई ।

कुंदन : तूने उसे क्यों बनाने दी ?

जिंदा : वो कह रही थी कि मैंने बनानी है तो मैं उसे बांह पकड़कर तो नहीं रोक सकता था।

कुंदन : बांह पकड़कर तो नहीं रोक सकता था *(बदलकर)* अगर बांह पकड़ ले तो अच्छा ही हो।

जिंदा : बापू जी...

कुंदन : गुस्सा क्यों करता है, अगर तू कहे तो तेरे ताया से बात करूं।

जिंदा : अभी नहीं, बापू।

कुंदन : हां, अभी नहीं- अभी तो तूने बहुत किले फतह करने हैं।
(बाबा बाहर से ही बोलता हुआ आ रहा है।)

बाबा : ले, किला तो फतह हो गया है-

कुंदन : ताया, कौन सा किला फतह हो गया है?

बाबा : हमारे राजू मास्टर की मास्टरनी वाला।

कुंदन : मास्टरनी वाला?

बाबा : मैं कब से कह रहा था कि छिंदो अब ननिहाल में रहकर पढ़ेगी- उसके बड़े मामे और मामियां तो एकदम मान गए। पर ये मास्टरनी ही तंग थी और कुंदन सिंह, तेरी छोटी भाभी पता नहीं अपने आपको कोई अलौकिक चीज समझती है।

कुंदन : पर बहू तो ताया तेरी ही है ना।

बाबा : अरे कुंदन सिंह! हमने इस खूंडे से बड़े-बड़ों को तीर-सा सीधा कर दिया, पर ये जब से आई है इसने हमें ही तीर बना दिया है- पता नहीं गुमान किस बात का है? आगे से उसे मिल गया है खूसट मास्टर राजू।

कुंदन : ताया, पढ़ी-लिखी है, पढ़ाती है, अपनी कमाई करती है।

बाबा : हम उसकी कमाई का क्या करें अगर हर वक़्त घर में तूफान खड़ा रखे- ले आज की सुन, आज इस बात पर झगड़ा हो गया कि उसका साबुन किसी और ने क्यों इस्तेमाल किया? भई खुशबूदार साबुन था, किसी बच्चे ने इस्तेमाल कर लिया होगा- अब उसके दो टके के साबुन की खातिर उसकी जेठानियों ने बच्चों को नहलाना तो बंद नहीं कर देना।

कुंदन : पर ताया वो छिंदो के यहां पढ़ने से परेशान क्यों थी?

बाबा : क्योंकि घर में उसकी पैठ जो खत्म हो गई है। पहले तो बच्चे कभी-कभार स्कूल का काम करते वक़्त उससे पूछ लेते थे, पर जब से

छिंदो आई है, बच्चे छिंदो के इर्द-गिर्द ही रहते हैं और इसी बात से वह ख़फ़ा थी। कहती थी- मास्टरनी तो मैं हूं और बच्चे जाते हैं छिंदो के पास- भई बच्चे तो होते हैं प्यार के भूखे, जो उनसे प्यार करेगा उसी के पास जाएंगे- जो ब्याई कुतिया की तरह उचक-उचक कर पड़ेगा, वहां क्या जाएंगे, पर आज किला फतह हो गया।

कुंदन : वो कैसे?

बाबा : अपने स्कूल से चैक करने के लिए पर्चे लाई थी, वो छिंदो ने चैक कर दिए और नंबर भी लगा दिए- कहने लगी, छिंदो बहुत समझदार है, बापू जी, इसे यहीं रहने दो।

कुंदन : तो फिर अपनी ग़रज की खातिर ही कहा-

बाबा : तो और क्या? कुंदन सिंह, मुझे मास्टरनी से ज़रा भी परेशानी नहीं है, परेशानी तो अपने मास्टर राजू से है जो सबकुछ देखता हुआ भी उसके सामने बुत्त बना बैठा रहता है।

कुंदन : ताया, तुम्हें पता है कुछ मुंहफट औरतें आदमी की एक नहीं चलने देतीं। तू ही बता, तूने कभी हमारी ताई की बात टाली थी?

बाबा : तू तो मखौल कर रहा है कुंदन सिंह- तेरी ताई जैसा कोई दूसरा हो सकता है? हर मुश्किल वक़्त में मेरा साथ देती थी। 'गुरु के बाग' के मोर्चे पर मेरे साथ गई, मेरे साथ लाठियां झेलीं। *(गर्दन घुमाकर)* अरे, जिंदा पुत्तर, अखबार पढ़ रहा है, मुझे भी कोई खबर सुना आज की।

जिंदा : ताया जी, खबरें तो सारी कल जैसी ही हैं, चोर बाजारी की, भ्रष्टाचार की, अपहरण की, भूखों की, नंगों की, पर गुरु के बाग का मोर्चा अभी कहीं नहीं लगा।

बाबा : पुत्तर, मोर्चा भी लग जाएगा। ये जो 'सरकारे-दरबारे' अंधेरगर्दी मची है, मोर्चे लगाने वाली बात तो बनती है- फिरंगियों ने इसी तरह सारी हदें पार की थीं, जब मोर्चे लगे थे।

जिंदा : पर ताया जी, अब इस तरह के मोर्चे नहीं लगेंगे कि लाठियां खाओ और घर आ जाओ।

बाबा : पुत्तर, यह सबकुछ तो वक़्त की ज़रूरत के मुताबिक ही होता है, और वक़्त सदा एक सा नहीं होता। तूने अपने बापू से उसके दादा मींहा सिंह बब्बर की बात सुनी है?

जिंदा : नहीं तो।

बाबा : कुंदन सिंह, यह तूने बहुत बुरा किया, अक्सर आदमी को अपने बड़े-बुजुर्गों की बातों का पता होना चाहिए।

जिंदा : ताया जी, क्या दादा जी पुलिस मुकाबले में मारे गए थे?

बाबा : हां पुत्तर, वह पुलिस मुकाबला आखिरी पुलिस मुकाबला था, अब की तरह नहीं कि आदमी को बांधकर मार दो और फिर अखबारों में खबर दे दो कि मुकाबले में मारा गया- पर तू किस सोच में पड़ गया है?

जिंदा : नहीं, कुछ नहीं ताया जी... अच्छा बापू यह किताब मैं तेजे को दे आऊं, अभी आया।

कुंदन : अच्छा, जल्दी आ जाना।

(चला जाता है)

कुंदन : ताया, इसीलिए तो मैं इसे कोई बात बताता नहीं, पहले ही पता नहीं क्या आग दबाए बैठा है, अपने सीने में...

बाबा : यह आग जलाना भी किसी-किसी के हिस्से आता है। एक यह है जो लोगों के दुखों को अपने सीने में दबाए फिरता है और एक मेरा ये मास्टर राजू है, जो अपनी औरत की गोद में सिमटा हुआ है- पढ़-लिखकर सब गुड़-गोबर कर दिया- हां, कुंदन सिंह, तेरे से एक बात करनी है, पहले तो झिझकता रहा-

कुंदन : क्या बात है ताया?

बाबा : पुत्तर, छिंदो ने बातों की बातों में इशारा किया है और मैं भी समझता हूं कि... आगे तू खुद समझ ले- जिंदा और छिंदो एक-दूसरे को बचपन से जानते हैं... ननिहाल में ही वो पली-बढ़ी है।

कुंदन : ताया, मुझे पता है जो तूने बात करनी है... बात भी मेरे दिल की, पर जिंदे का जो इरादा बन गया है, तेरा क्या ख्याल है कि इस हालात में छिंदो खुश रह सकेगी?

बाबा : हम आदमियों का यही नुक्स है कुंदन सिंह कि हम अपने आपको बड़ा सूरमा समझते हैं और सदा यही मानते हैं कि औरतें हमारे रास्ते में रुकावट होंगी- मैं भी यही समझता था, पर तेरी ताई ने जिस बहादुरी से हर मोर्चे पर मेरा साथ दिया- हमारी औरतों के हौसले कुछ कम नहीं हैं- सारी औरतें मास्टर राजू की मास्टरनी जैसी नहीं हैं।

कुंदन : ताया, जैसा कहोगे हो जाएगा, जिंदे पर मेरे से ज़्यादा आपका हक़ है-

(भगत जी बाहर से शोर मचाता हुआ आता है।)

भगत जी : अजी, बड़ा मज़ा आया, आकर देखो क्या हुआ?

कुंदन : क्या हुआ?

भगत जी : बताता हूं क्या हुआ? लाल जी पड़ा है खुले मैदान में।

बाबा : खुले मैदान में।

भगत जी : हां, मैं कुएं पर बैठा था- लाल जी और जिंदे में लड़ाई हो गई- लाल जी ने छिंदो को कुछ कहा था।

बाबा : अपनी छिंदो को?

भगत जी : वो साइकिल पर आ रही थी, लाल ने साइकिल का रास्ता रोक लिया- मैंने चीखने की आवाज़ सुनी, दौड़ता हुआ गया- और देखा जिंदा लाल जी को ललकार रहा था।

कुंदन : जिंदा?

भगत जी : हां, अपना सूरमा जिंदा-लाल जी ने चाकू निकाल लिया, पर जिंदेने चीते की तरह छलांग लगाकर उसे नीचे गिरा लिया, वो मारा 'पतंदर' को, वो मारा, अब खुले मैदान में पड़ा है टांगें तुड़वाकर, बहुत से लोग वहां जमा हो गए हैं।

बाबा : चल कुंदन सिंह, जल्दी चलें- और कोई उन्नीस-इक्कीस न हो जाए।

(दोनों जाते हैं।)

भगत जी : उन्नीस-इक्कीस क्या? पूरी इक्कीस हो गई है- बड़ा 'पतंदर', वो पड़ा है खुले मैदान में- मुझे मारता था -अब बोल बच्चू? हां, अब बोल तो?

(फेडआऊट)

तीसरा दृश्य

(ठेकेदार बचन सिंह कुंदन सिंह से बातचीत कर रहा है)

ठेकेदार : देख कुंदन सिंह, हमारी तुम्हारे से कोई दुश्मनी नहीं है, जिंदा अगर अब भी अपनी हरकतों से टल जाए तो मैं केस रफा-दफा करवा सकता हूं।

कुंदन : किन हरकतों से ठेकेदार?

ठेकेदार : यही जो उसने और उसकी सभा वालों ने मेरे खिलाफ प्रचार शुरू

कर रखा है कि बचन सिंह जब से सरपंच बना है पंचायत के फंडों में हेराफेरी हो रही है।

कुंदन : ठेकेदार, इसमें बात गलत तो कोई भी नहीं है, पैसा तो इधर-उधर खाया ही गया है।

ठेकेदार : पर इसकी सारी जिम्मेदारी मेरे पर तो नहीं- और दूसरे पंचायत मेंबर भी उतने ही जिम्मेदार हैं- फिर कहते फिर रहे हैं कि गांव के कोटे का सीमेंट ठेकेदार ने शहर में अपनी कोठी में लगवा लिया, भला मैंने शहर में गांव के कोटे का सीमेंट ही लगवाना था?

कुंदन : पर इसमें तो कोई झूठ नहीं कि पिछले पूरे साल में एक भी बोरी सीमेंट की गांव में नहीं आई।

ठेकेदार : इसमें मेरा क्या कसूर है, अगर पीछे से ही सीमेंट न आया हो- और अगर मैंने सरकार से कोई सहूलियत ले भी ली है तो सरकार के काम भी मैं ही करता हूं। कोई सरकारी आदमी गांव में आए, पुलिस का हो या दूसरा, उसके खाने-पीने का सारा इंतज़ाम मेरे जिम्मे ही होता है।

कुंदन : ठेकेदार, वे आते ही तेरे बुलावे पर हैं- हमारे से तो उन्हें क्या काम? इसलिए अपने मेहमानों की खातिरदारी तूने खुद ही करनी हुई।

ठेकेदार : मेरे कैसे मेहमान हैं, अगर आने-जाने वालों की आवभगत न करें तो गांव की बदनामी नहीं होती?

कुंदन : गांव की बदनामी तो ठेकेदार और भी कई बातों से होती है- और मतलब की बात कर कि अब चाहता क्या है?

ठेकेदार : यही कि जिंदा पंचायत में लाल जी से माफी मांग ले और आगे से मेरे खिलाफ प्रचार बंद कर दे।

कुंदन : यह नहीं होने वाला ठेकेदार, वैसे तू कहे तो मैं जिंदे और लाल जी में सुलह-समझौता करवाने में अपना योगदान दे सकता हूं। दोनों इसी गांव के लड़के हैं, साथ पढ़े हैं, मैं भी नहीं चाहता हूं कि गांव में बेकार ही धूल उड़े या वैर-विरोध बढ़े। ताया भी यही चाहता है।

ठेकेदार : तू ताये की छोड़- उसे मैं खुद बुला लूंगा- उसके लड़के मास्टर राजेन्द्र सिंह को मैंने ही नौकरी लगवाया था, उसे कौन नौकरी देने वाला था-निरा राजू का राजू- तू जिंदे की बात कर।

कुंदन : बचन सिंह, मैं जिंदे की क्या बात करूं- उसकी अपनी अक्ल है, मैं उसे कुछ नहीं कह सकता।

ठेकेदार : सोच ले कुंदन सिंह-

कुंदन : सोच रखा है सबकुछ- तुझे जो कुछ करना है, कर ले- एक तरफ तेरा लड़का गुंडों की टोली बनाकर ललकार रहा है- एक तरफ तू धमकियां दे रहा है- आखिर तुम हो कौन- तुम समझते क्या हो अपने आपको ?

(उठते हुए)

ठेकेदार : वो तो फिर बता देंगे।

कुंदन : बता देना, बता देना, हमने कौन सा चूड़ियां पहन रखी हैं।

ठेकेदार : *(जाते हुए)* तो फिर देख लेंगे।

कुंदन : देख लेना भई, देख लेना।

(बचन सिंह जाता है)

(कुंदन सिंह अपने आप से) जो भी आता है आग पर सवार होकर ही आता है।

(बाबा आता है)

बाबा : अरे कुंदन सिंह- ये ठेकेदार तेरे घर से गया है ?

कुंदन : हां ताया।

बाबा : क्या कह रहा था ?

कुंदन : यूं ही धमकियां दे रहा था जिंदे के बारे में- कह रहा था- अगर लाल जी से माफी मांग ले तो केस रफा-दफा हो सकता है।

बाबा : माफी मांग ले ? इसके सिर में जूते ना मारें ? लाल जी क्यों न माफी मांगे ? और हां, तू केस की फिक्र मत करना- तेरे भाई कह रहे थे कि पूरी ताकत से मुकद्दमा लड़ेंगे।

कुंदन : पर ठेकेदार तो कहता था मास्टर राजेंद्र सिंह...

बाबा : अरे तू मास्टर राजू की बात मत कर, वो पुत्तर तो बेशक मेरा ही है- पर वो भी कोई आदमी है- ठेकेदार ने उसे झांसा दिया है कि वह डी.ई.ओ. को कहकर मास्टरनी को भी मास्टर वाले स्कूल में लगवा देगा। आगे भी इन्होंने यही कुछ करना है। बच्चे तो फिर पढ़ लिए- बाकी पुत्तर, तू ज़रा चौकन्ना रहना, बदमाशों का पता नहीं चलता- और अगर अंधेरे-सवेरे बाहर निकलना पड़े तो हथियार के बिना मत निकलना।

कुंदन : ताया तू मेरी फिक्र मत कर।

बाबा : सुना है ठेकेदार के घर हर रोज महफिल सजती है, लभू स्मगलर,

जीता दूधिया और साथ के गांवों के बदमाश पता नहीं क्या योजना बनाते रहते हैं ?

कुंदन : योजना यही जो अपने मुंह से बता गया है... पर ताया, मैं भी दादा मींहा सिंह का पोता हूं, इन सरकारी पिट्ठुओं से एक-एक करके निपटूंगा- और वैसे भी ताया, मुझे किस बात की फिक्र है, यह सारा कामकाज मैं जिंदे के लिए ही कर रहा था, अब जब उसने रास्ता चुन लिया है तो मैं भी कुछ सुर्खरू महसूस करता हूं-

बाबा : हां पुत्तर, रास्तों का फैसला तो हो ही गया है- एक जिंदे और उसके साथियों का रास्ता है और दूसरा ठेकेदार बचन सिंह वाला- बाकी राजू मास्टर जैसों को कौन पूछता है ? मतलब के गुलाम।

(भगत जी बाहर से शोर मचाता हुआ आता है, एक टांग से लंगड़ाकर चल रहा है)

भगत जी : अब मैं एक टांग पर खड़ा होकर कसम खाता हूं कि मैं किसी की बहन-बेटी को नहीं छेड़ूंगा, मैं सीधा तीर हो गया हूं।

बाबा : अरे भगत जी, तुझे क्या हो गया 'चंगे-भले' को ?

भगत जी : मुझे नहीं हुआ, उसे हो गया है- अब फिरता है एक टांग पर- और उसका बाप, वो बड़ा ठेकेदार, मुझे कहता है कि तुझे पागलखाने दाखिल करवा देना है, कहता है कि तू मेरे लाल जी को छेड़ता है। मैंने कहा, वो 'पतंदर' लड़कियों को छेड़ता है, मैं उसे छेड़ता हूं।

कुंदन : भगत जी, अगर तेरे यही ढंग रहे तो वो किसी दिन अंदर करवा देगा।

भगत जी : लूट मची है, अंदर करवा देगा, वो मुझे अंदर करवाएगा, मैं भाग जाऊंगा, और कह रहा था जिंदे से सरकार निपटेगी पर कुंदन सिंह से मैं निपटूंगा।

कुंदन : निपट ले, निपट ले, वो भी अपना अरमान पूरा कर ले।

भगत जी : हुंह, बड़ा आया है सबसे निपटने वाला, भाई जी, उसकी भी टांग तोड़ दे, दोनों बाप-बेटा एक जैसे हो जाएंगे, फिर बड़ा मज़ा आएगा।

बाबा : अरे भगत जी, क्यों गांव में झगड़ा करवाता है ?

कुंदन : ताया, ये थोड़े ही झगड़ा करवाता है, पहल तो अब हो गई है।

भगत जी : हां पहल तो हो गई है- अब चला फिरता है एक टांग पर।

बाबा : पर कुंदन सिंह यह लड़ाई अभी व्यक्तिगत लड़ाई नहीं होगी, इसे गांव की इज्ज़त की लड़ाई में बदलना है- लोग कहीं यह न मान लें

कि जिंदे ने लाल जी से इसलिए टक्कर ली क्योंकि वह छिंदो से प्यार करता है- ठेकेदार तो अभी से 'हीर-रांझा' के किस्से बना रहा है।

भगत जी : हां, कैदों तो पहले से ही एक टांग पर घूम रहा है।

(बाहर से शोर मचाता हुआ जिंदा दौड़ता हुआ आता है)

बाबा : अरे क्या हुआ ?

जिंदा : ठेकेदार और उसके गुंडे लाठियां उठाए इधर आ रहे हैं।

कुंदन : तो फिर आ जाएं।

बाबा : अरे ठहर जाओ, मैं देखता हूं बाहर जाकर।

(बाहर से ललकारने की आवाज़ आती है)

''निकल ओए कुंदन सिंह बाहर''

''देखें तुझे, बड़े सूरमा को''

''अब पुत्तर को अपनी गोद में छुपा लिया है।''

''निकल बाहर...''

(हुंकार पर हुंकार भरते हैं)

भगत जी : निकलते हैं भई, निकलते हैं।

(एक लाठी वह भी उठाता है)

कुंदन : ताया, मैं नहीं चाहता था कि गांव में झगड़ा बढ़े और बेकार ही में गांव में धूल उड़े।

जिंदा : नहीं बापू, जब तक ज़िंदगी के दुश्मन हमारे गांव में मौजूद हैं टक्कर लेनी ही पड़ेगी- और ये धूल उड़ती ही रहेगी।

(सभी लाठियां ताने लड़ने की मुद्रा में फ्रीज हो जाते हैं।)

बाबा : हां पुत्तरो, जब तक अच्छाई और भलाई के दो पक्ष रहेंगे ये धूल उड़ती ही रहेगी। *(वह भी लाठी तान लेता है)*